P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

''गाँधीवाद''जीवन दर्शन एवं जीवनयापन की एक शैली

दीपाली शर्मा
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
स.ध.राजकीय महाविद्यालय,
ब्यावर, राजस्थान, भारत

सारांश

महात्मा गाँधी ने किन्ही तत्वमीमांसीय समस्याओं पर चिन्तन नहीं किया और न ही किन्हीं नैतिक सिद्धान्तों को जन्म दिया है बल्कि गाँधीजी ने जीवन का एक मार्ग बतलाया है, जीने का एक दृष्टिकोण दिया है। गाँधीजी के इस जीवन दर्शन को ही गाँधीवाद की संज्ञा दी जाती है।

डॉ. पट्टाभिसीतारमैया के अनुसार, गाँधीवाद किन्ही सिद्धन्तों,वादों या नियमों का संग्रह नहीं है वरन् जीवनयापन की एक शैली है, जीवन दर्शन है।''

गाँधी का जीवन दर्शन अर्वाचीन समस्याओ का प्राचीन समाधान है, इसलिए यह कोई नया दर्शन नहीं है वरन् नया मार्ग आवश्य है।

चूँकि गाँधीजी का दर्शन कोई वाद नहीं है। अतः इसे गाँधीवाद नहीं कहा जा सकता है तथापि गाँधीजी ने स्वयं कहा था'' गाँधी मर सकता है,परन्तु गाँधीवाद सदा जीवित रहेगा।''

गाँधीवाद के मूल तत्वों के अन्तर्गत सत्य, अहिंसा, सेवाभाव, ईश्वर, प्रेम, करुणा, दया और परोपकार आदि सदवृत्तियों को शामिल किया जाता है। गाँधीजी के अट्ठारह सूत्री कार्यक्रम के अंग आदिवासियों और कोढियों की सेवा–उनकी सेवावृत्ति के परिचायक हैं।

मुख्य शब्द : तत्वमीमांसा, नैतिक सिद्धांत, गाँधीवाद, सत्य, अहिंसा, सेवाभाव, ईश्वर, सदवृत्तियां, धर्म, दर्शन, आध्यात्म, उपनिषद्, ब्रह्मवाद, अनीश्वरवाद, शुभ, सत्याग्रह, कारणात्मक प्रयोजन, असहयोग, नागरिक अवज्ञा, हिजरत, हड़ताल, उपवास।

प्रस्तावना

गाँधीवाद महात्मागाँधीजी की विचार पद्धति का एक व्यापक रुप है, साधारण अर्थ में गाँधीवाद व्यक्ति तथा समाज के हित का तथा जीवनशैली एवं जीवन दर्शन का वह विज्ञान है, जिसमें व्यक्ति तथा समाज के जीवन का सर्वांगीण विकास हो सकता हैं। इस दर्शन के प्रधान पुरोधा तथा प्रयोगकर्त्ता स्वयं गाँधीजी हैं।विभिन्न दर्शन ग्रन्थों, धार्मिक ग्रन्थों,आध्यात्मिक साधकों और अन्य क्षेत्रों के चिंतकों के विचारों के गहन अध्ययन,चिन्तन और मनन के उपरान्त गाँधीजी जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया,वह मूलतः आध्यात्मिक जीवन दर्शन है।

गाँधीजी के दर्शन पर हमें वेद,उपनिषद्,गीता आदि का प्रभाव स्पष्टतः देखने को मिलता है। उपनिषदीय ब्रह्मवाद के अनुसार ही वे सगुण और निर्गुण में समन्वय करते हैं।

गाँधीजी के दर्शन पर डेविड थूरो, लाओत्से, कन्फ्यूशियस, रस्किन, टॉलस्टाय आदि विदेशियों के विचारों का भी प्रभाव पड़ा है। गाँधीजी ईसाई धर्मग्रन्थों 'न्यू टेस्टामेन्ट' और 'सर्मन ऑन द माऊण्ट'से भी प्रभावित थे।

रस्किन की पुस्तक 'अनटू द लास्ट' से गाँधीजी ने शारीरिक श्रम की शिक्षा ली तथा टॉलस्टाय की पुस्तक 'ईश्वर का साम्राज्य अपने भीतर है' को पढकर गाँधीजी आस्तिक बने।

धर्म संबंधी विचार

धर्म गाँधीजी के दर्शन की आधारशिला है, जिसे भली–भाँति समझे बिना गाँधीजी के दर्शन की समुचित व्याख्या नहीं हो सकती है।

गाँधीजी का धर्म से तात्पर्य किसी परम्परागत धर्म से नहीं था वरन् उस धर्म से था जो सभी धर्मों का मूल है और जो हमें सत्य का साक्षात्कार कराता है। उनके अनुसार धर्म का अर्थ हिन्दू धर्म नहीं है न ही कोई अन्य धर्म है वरन् धर्म वह है,जो आत्मोत्थान तथा आत्मशुद्धि का साधन है। इसी कारण गाँधीजी सभी धर्मों में समन्वय स्थापित करते हुए कहते हैं कि सभी धर्म चाहे वे ईश्वरवादी हों या अनीश्वरवादी ; आत्मशुद्धि का साधन हैं। सत्य की प्राप्ति का साधन हैं। इस प्रकार गाँधीजी धर्म को सम्प्रदाय विशेष से मुक्त मानते हैं तथा धर्म को विवेकमूलक मानते है। उनके अनुसार धार्मिक मूल स्वतः प्रकाशित होते

है; इन्हें किसी सम्प्रदाय की अपेक्षा नहीं है। अतएव धर्म का आन्तरिक यथार्थ स्वरुप सम्प्रदाय निरपेक्ष है।

गाँधीजी धर्म में ईश्वर की अवधारणा को भी आवश्यक मानते है। उनके अनुसार ईश्वर के बिना धर्म का जीवित रहना कठिन है। गाँधीजी के अनुसार सत्य ही ईश्वर है और सत्य का श्रद्धापूर्वक पालन करना ही सच्च धर्म है। सत्याचरण करना ही सर्वोत्तम धर्म मार्ग है।

ईश्वर

स्पष्ट है कि गाँधीजी धर्म में ईश्वर की अवधारणा को आवश्यक मानते थे। वे पूर्णतः आस्तिक और ईश्वर में उनकी अटूट आस्था थी। उन्होंने स्वयं कहा था कि''यदि समस्त संसार अनीश्वरवाद बन जाय तो भी वे ईश्वर के एकमात्र साक्षी वर्तमान रहेंगे।'' उन्होंने कहा था– ''मै जल तथा वायु के बिना शायद रह सकता हूँ,परन्तु ईश्वर के बिना नहीं।''

गाँधीजी ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों रुपों को मानते थे। पहले व सगुण रुप के उपासक थे, किन्तु बाद में निर्गुण रुप को मानने लगे। इसका प्रमुख कारण यह था कि सगुण रुप ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण होता है। व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर किसी भी सम्प्रदाय का ईश्वर बन जाता है तथा दूसरे सम्प्रदाय वाले इसका विरोध करने लग जाते हैं, फलतः व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर विरोध का कारण बन जाता है। इसी कारण गाँधीजी ने बाद मे ईश्वर को निर्गुण तथा निराकार माना। उन्होंने स्वयं कहा था– ''मै ईश्वर को व्यक्ति रुप नहीं मानता हूँ।''

ईश्वर सत्य है

गाँधीजी ईश्वर को सत्य मानते थे। गाँधीजी द्वारा ईश्वर सत्य है, कहने का अर्थ है कि ईश्वर की सत्ता या अस्तित्व का निषेध सम्भव नहीं है। ईश्वर के स्वरुप का निषेध हो सकता है,किन्तु उसके अस्तित्व का नहीं।'सत्य ही ईश्वर है' यह विचार 'ईश्वर सत्य है' का ही परिमार्जित तथा परिष्कृत रुप है। गाँधीजी मानते थे कि सत्य का क्षेत्र ईश्वर के क्षेत्र से अधिक व्यापक है। सत्य आस्तिक तथा नास्तिक दोनो समान रुप से स्वीकार करते है। अब चूँकि गाँधीजी की ईश्वर में अटूट आस्था थी इसलिए वे यह नहीं चाहते थे कि कोई धर्म ईश्वर के अस्तित्व पर तनिक भी सन्देह करे। इसीलिए गाँधीजी ने सत्य को ही ईश्वर कहा क्योकि सत्य को सभी समान रुप से स्वीकार करते है। इस प्रकार गाँधीजी सत्य और ईश्वर में अभेद या तादात्म्य स्थापित करते हैं। गाँधीजी ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष में कुछ प्रमाण भी प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें दार्शनिक शब्दावली में कारणात्मक प्रमाण,प्रयोजनात्मक प्रमाण, नैतिक प्रमाण तथा उपयोगितावादी प्रमाण कहा जाता है।

मानव

गाँधीजी के अनुसार शरीरी मनुष्य,मनुष्य का वास्तविक स्वरुप नहीं वरन् यह इसका भौतिक स्वरुप है जो कि इसका बाह्म पक्ष है। गाँधीजी के अनुसार मानव का मूल स्वरुप उसका आध्यात्मिक स्वरुप है। मानव का आन्तरिक पक्ष या आत्मपक्ष ही उसका आध्यात्मिक स्वरुप है। यह आध्यात्मिक पक्ष ही ईश्वरत्व के अधिक निकट है। यह मानव में ईश्वरत्व का अंश है जो कि अपने को अनेक रुपों यथा– विवेक शक्ति अन्तरात्मा की आवाज,इच्छा स्वातन्त्र्य आदि के रुप के अभिव्यक्त करता है। यह ईश्वरीय अंश मनुष्य में निहित अनिवार्य शुभत्व है। इसी कारण गाँधीजी कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति स्वभावतः अच्छा होता है व्यक्ति में जो बुराइयाँ दिखाई देती हैं या व्यक्ति जो हिंसात्मक व्यवहार करता है,वह उसके बाह्म पक्ष के करण होता है।

सत्याग्रह

गाँधीजी के नैतिक दर्शन का सार सत्याग्रह है। सत्याग्रह का अर्थ है–'सत्य का आग्रह' या सत्य के लिए आग्रह'। गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह सत्य प्राप्ति का साधन है। यह सत्य के लिए युद्ध करना है, किन्तु अंहिसात्मक साधनों द्वारा। अहिंसात्मक साधनों का प्रयोग करते हुए अपने शत्रु का हृदय परिवर्तन कर उसे सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार करना ही सत्याग्रह है। यह ईश्वरीय मार्ग है क्योंकि सत्य ही ईश्वर है। गाँधीजी के अनुसार यह अंहिसा की हिंसा पर,प्रेम की द्वेष पर तथा सत्य की असत्य पर विजय का मार्ग है। यह कष्ट देने का मार्ग नहीं वरन् कष्ट सहने का मार्ग है।सत्य को साक्षी मानकर प्रेमपूर्वक कष्ट सहने के लिए तत्पर होने का मार्ग है। इसी कारण यह निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं है। निष्क्रिय प्रतिरोध में हिंसा होने की सम्भावना रहती है, जबकि सत्याग्रह अहिंसात्मक होता है। निष्क्रिय प्रतिरोध विरोधी का दमन है, जबकि सत्याग्रह विरोध का दमन है। गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह के अनेक रुप होते हैं, किन्तु वे मुख्य रुप से इन पाँच रुपों को ही महत्व देते हैं–

1. असहयोग 2. नागरिक अवज्ञा 3. हिजरत 4. हड़ताल तथा 5. उपवास।

गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह के लिए मनुष्य में ईमानदारी, निष्ठा, सहिष्णुता, धैर्य, आत्मसंयम, आत्मानुशासन, अहिंसा, प्रेम, सरलता, निष्कपटता, निर्भयता, अटूट संकल्प शक्ति और ईश्वर में अटूट आस्था होनी चाहिए।

गाँधीजी के अनुसार 'अहिंसा' साधन शुभ है जो साध्य शुभ 'सत्य' की प्राप्ति का आधार है। गाँधीजी के अनुसार मन,वचन,तथा कर्म से हिंसा का त्याग करना ही अंहिसा है, किन्तु गाँधीजी मानते थे कि किन्ही विशेष परिस्थितियों में यदि हिंसा भी करनी पड़े तो वह अनुचित नहीं है,बशर्ते वह हिंसा दया और करुणा के भाव से प्रेरित होनी चाहिए। गाँधीजी के अनुसार मानव के दो पक्ष हैं– एक भौतिक पक्ष, दूसरा आत्म पक्ष। मानव द्वारा जो हिंसा की जाती है,वह उसके भौतिक पक्ष के कारण ही होती है। मानव का आत्मपक्ष स्वाभवतः अंहिसक होता है और चूँकि मानव का आत्म पक्ष ही उसका मूल स्वरुप है। इसलिए मानव स्वभावतः अहिंसक ही होता हैं

स्वदेशी

स्वदेशी का सामान्य अर्थ है ' अपने देश में बनी हुई वस्तुओ का उपयोग तथा विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार'। किन्तु गाँधीजी की स्वदेशी अवधारणा अधिक व्यापक है। गाँधीजी ने इस भावना का प्रयोग न केवल अर्थ के क्षेत्र में किया है वरन् धर्म, राजनीति, भाषा आदि क्षेत्रो में भी किया जाता है।

गाँधीजी के अनुसार यदि विदेशी वस्तुओं, के उपभोग से कोई हानि न हो तथा देश की वस्तुओं तथा

उद्योगो को हानि न हो तो हमें विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं करना चाहिए।

गाँधीजी के अनुसार स्वदेशी की भावना केवल वस्तुओं के उपभोग में ही नहीं होनी चाहिए वरन् धर्म, राजनीति,भाषा आदि क्षेत्रों मे भी होनी चाहिए। धर्म के क्षेत्र में स्वदेशी का अर्थ है– अपने पूर्वजों के धर्म को परिष्कृत कर अपनाना,राजनीति के क्षेत्र में स्वदेशी का अर्थ है– स्वदेशी संस्थाओं की स्थापना करना। भाषा के क्षेत्र में स्वदेशी का अर्थ है– अपनी मातृ–भाषा का प्रयोग करना।

सर्वोदय व स्वराज

गाँधीजी के अनुसार 'स्वराज' का अर्थ है 'अपना राज्य अपना शासन'। गाँधीजी के अनुसार स्वराज आदर्श राज्य की स्थापना की अनिवार्य शर्ते है। यही राजनीतिक स्वतन्त्रता है जिसका अर्थ है–प्रत्येक व्यक्ति शासन करने के लिए स्वतन्त्र हो अर्थात् सत्ता कुछ व्यक्यिों के हाथों में केन्द्रित न हो, सब के हाथ में हो।प्रत्येक व्यक्ति शासन का अनिवार्य अंग हो।

गाँधीजी के आदर्श समाज का उद्देश्य है– सर्वोदय। सर्वोदय का अर्थ है–'सबका उदय' या सबका शुभ। सर्वोदय; प्रत्येक व्यक्ति का पूर्ण विकास है और प्रत्येक व्यक्ति का पूर्ण विकास होने पर ही समाज का पूर्ण विकास होता है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति समज का अनिवार्य अंग हैं। गाँधीजी के अनुसार समाज का पूर्ण विकास होने पर ही आदर्श मानव समाज की स्थापना हो सकती है। ऐसे आदर्श समाज में प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक दृष्टि से पूर्णरुपेण विकसित होगा।

गाँधीजी के अनुसार सर्वोदय प्रत्येक व्यक्ति में अन्तर्निहित शुभ है। इस आन्तरिक शुभ का प्राप्त करने का सभी को समान अवसर मिलना चाहिए।सर्वोदय उपयोगितावाद नहीं हैं क्योकि सर्वोदय का आधार प्रेम है, जबकि उपयोगिता का आधार सुख है। सर्वोदय की अवधारणा जाति भेद, वर्ग संघर्ष,साम्प्रदायिकता आदि से हित है।

न्यास–सिद्धान्त (The Doctrine of Trusteeship)

गाँधीजी का उद्देश्य एक ऐसे आदर्श समाज की स्थापना करना था जिसमें धनी–निर्धन, ऊँच–नीच आदि का भेद न हो तथा सभी व्यक्ति पूर्णरुपेण विकसित हों,प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं के अनुरुप प्राप्त हो। इसीलिए गाँधीजी ने धनी व्यक्यिों के पास आवश्यकता से अधिक अर्जित सम्पति का न्यास बनाने की अवधारणा प्रस्तुत की । इस अवधारणा के अनुसार धनी व्यक्तियों द्वारा संचित सम्पति का सामाजिक संरक्षण तथा सामूहिक उपभोग होना चाहिए। यह अवधारणा सम्पति के व्यक्तिगत स्वामित्व तथा व्यक्तिगत उपभोग का निषेध करती है।

सदंर्भ ग्रन्थ

1. *गाँधीजी, महादेव दे. ऑटोबायोग्राफीः द स्टोरी ऑफ एक्सपेरिमेंट्स विद् ट्रुथ (सत्य के साथ मेरे अनुप्रयोग) महादेव देसाई द्वारा अनुवादित। वांशिंगटन डी.सी. पब्लिक अफेयर्स प्रेस. 1948*
2. *बसन्त कुमार लाल, समकालीन भारतीय दर्शन श्री जेनेन्द्र प्रेस,1973*
3. *जोली, सुरजीत कुमार, रीडिंग गाँधी(कॉन्सेप्ट पब्लिक, नई दिल्ली, 2006) पेज 3,6 एवं 278*
4. *राय, बी.एन, गाँधीगिरीः सत्याग्रह आफ्टर हन्ड्रेड ईयर्स (घावेरी बुक्स, नई दिल्ली,2008) पेज 6*
5. *हिन्दी साहित्य मे वैचारिक पृष्ठभूमि, डॉ. विनय कुमार पाठक, पेज 62*
6. *लेखक की बात गाँधीवाद की रुपरेखा, सं. रामनाथ सुमन, पेज 6*
7. *गाँधीवादी हिन्दी साहित्य कोष,सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा,पेज 21*
8. *गाँधी एम.के. यंग इंडिया,11 अगस्त 1920, पेज. 3*
9. *गाँधी प्रासंगिकताः राष्ट्रीय सहारा 27 मार्च 1992 में आलेख*
10. *गाँधी ओर गाँधीवादः डॉ. पट्टभि सीतारामैया, पेज 28*
11. *घोष, एस. माडर्न इंडियन थॉट, (अलाईड पब्लिश प्राइवेट लि.,नई दिल्ली) पेज 172*
12. *अय्यर, राघवन एन. ''द मोरल एण्ड पोलिटिकल थॉट ऑफ महात्मा गाँधी(ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,2000)*